पांडवानी
इतिहास की कसौटी पर वर्तमान को तोलती कला

सुनीता ठाकुर

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर और कला का अनुपम उदाहरण है पांडवानी। पांडवानी शब्द का शाब्दिक अर्थ अगर देखें तो यह पांड और वाणी दो शब्दों से बना है। पांडित्य पूर्ण जो वाणी है वह पांडवानी है। यानी पांडवानी एक पौराणिक कथा के माध्यम से जीवन के मर्म और तथ्यों का मूल्यांकन करने वाली आवाज़ है।

पांडवानी का महत्व महाभारत जैसे वृहद काव्य के जीवन सत्यों को अपने समसामयिक संदर्भों के साथ प्रस्तुत करने से और भी बढ़ जाती है।

तीजनबाई के बाद रीतू वर्मा पांडवानी की दुनिया में एक और जाना माना नाम है जिसने इस काव्य को जन जन तक नए जोश और नए अर्थों में पहुंचाने और उनके अन्तर्मन में इस काव्य के मर्म को समोने में अपनी नाट्य कला और संगीत कौशल का अद्‌भुत प्रयोग किया है।

तीजन की ही भांति रीतू भी स्टेज पर महाभारत के विभिन्न पात्रों की प्रस्तुति में नए संदर्भों को जोड़ने और व्याख्यायित करने का प्रयास करती हैं। आठ साल की उम्र से उन्होंने तीजन जैसे विभिन्न कलाकारों को पांडवानी प्रस्तुत करते सुना और देखा तो उनके मन में अनजाने ही यह हुनर जोश मारने लगा। वे खेल खेल में उसे कला का नाट्यन करने लगीं। उनके परिवारजनों ने उनकी इस भावना को पहचाना और इस तरह से इस लोककला को एक और पांडवानी कलाकार मिल गया। रीतू वर्मा को उनकी पांडवानी प्रस्तुतियों के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर खासी पहचान और सम्मान मिला है।

यह समझने की बात है कि पांडवानी को इन स्त्री कलाकारों द्वारा क्यों अपनाया गया, और यह कला प्रस्तुतियां, वह भी छत्तीसगढ़ के अपने देहाती इलाकों और समाज में, करना उनके लिए बहुत आसान काम नहीं रहा। क्योंकि समाज स्त्री को जिस घूंघट और बंधन में बांधे रखना चाहता है वहां स्त्री द्वारा मंच पर महाभारत जैसे काव्यों की व्याख्या करना किसी के लिए भी सहज स्वीकार्य नहीं था। मगर तीजन और रीतू वर्मा ने इस काव्य की महिलाओं की अस्मिता, जीवन के आदर्शों और मानवीय संदर्भों के साथ जोड़कर नई व्याख्या की है। स्त्री का सम्मान, जातिवाद, संबंधों की व्याख्या, सद्‌कर्म और कर्मभावना, अच्छा शासक और शासन की व्याख्या, शिक्षा और शिक्षा व्यवस्था ऐसे कई संदर्भ हैं जो महाभारत को एक सांस्कृतिक धरोहर से ज़्यादा जीवन काव्य बनाते हैं, इसलिए महाभारत का नाट्य मंचन लगातार विभिन्न स्तरों पर होता रहा है। उसमें आदर्श से ज़्यादा व्यवहार है, धर्म से ज़्यादा कर्म है।

पांडवानी का मंचन

देहरी से बाहर, पल्लू से फैंटा बांधे, हाथ में तंबूरा थाम स्टेज पर उतर इन महिलाओं ने समाज की आंखों में झांक उन्हें वर्तमान सत्य का अहसास कराया है। पहले पहल तो कथा सुनाने वालों के साथ-साथ सुनने वालों पर भी पाबंदियां लगीं। सास, ससुर, पति भड़क उठे। नाक कटने के ताने, समाज में बेइज़्ज़ती के उलाहने, लोगों की फब्तियां, मज़ाक, सरेआम पति द्वारा बेइज़्ज़ती, बदनामी क्या क्या नहीं हुआ। मगर धीरे-धीरे माहौल बदला है। अब यह कला छत्तीसगढ़ की सीमाओं से बाहर देश की पहचान बनी है और अब महिलाएं भी इस कला में बराबरी से संगत और सहयोग देने लगी हैं। वे इसे देखती सुनती हैं, गुनती हैं और अतीत की ज़मीन पर वर्तमान के सच की व्याख्या करने लगी हैं। नतीजा जीवन में बदलाव आ रहा है, धर्म की जगह कर्म ले रहा है। वे अब गलत को गलत कहने और बदलने लगी हैं। इस तरह पांडवानी प्रस्तुति को इन महिलाओं ने जीवन और सोच में बदलाव का माध्यम बनाया है, जिसमें पांडवानी का स्थानीय भाषा में नाट्य मंचन और संगीतमय मंचन बेहद प्रभावी भूमिका निभाता है।

रीतू शर्मा अभिनय मुद्रा में

पांडवों की एक-एक कथा गाती ये महिलाएं, जैसे सागर की अनगिनत लहरें टकराती हों। स्त्री का जोश पछाड़ें मारता है और सुनने वाले देखते रह जाते हैं। वे बिजली की तरह स्टेज पर कौंधती, कभी शेर की तरह दहाड़ती हुई, कभी मां की तरह दुलारती हुई, कभी पत्नी की तरह प्रेम में डूबी, कभी राजनीतिज्ञ की तरह कुटिल चाल, व्यंग्य, हाव भाव में पूरे जीवन संदर्भो को तोलती हैं। शरीर का अंग अंग फड़क उठता हैं, पोर पोर थिरकने लगता है। उनका तंबूरा कभी अर्जुन की प्रत्यंचा बन जाता है, तो कभी भीम की गदा सा तन उठता है। पांडव कथा का गान करतीं ये कलाकार अपनी सुध-बुध बिसरा बैठती हैं। उनके चारों ओर एक मोहित करने वाली आभा फैली होती है, और यह तभी होता है जब पात्रों के साथ उनका एकाकार हो जाता है, विवेक उनकी नए संदर्भो के साथ व्याख्या कर रहा होता है।

इन कलाकारों ने परंपराओं की जड़ता नकारकर, जड़ होती एक पारंपरिक लोककला 'पांडवानी' को नया जीवन, नई पहचान दी है। तुलसीदास की तरह इन्होंने महाभारत की शास्त्र कथा को जनता तक पहुंचाया है और मीरा की भांति प्रेम, भक्ति गीतों को नया अर्थ दिया है। इनके लिए पांडव कथा महज एक लोकनाट्यकला नहीं थी, उनके लिए यह एक अभियान था। एक ऐसा अभियान जिसके द्वारा वे परिवार और रिश्तों को नए संदर्भ और नए मूल्य देने की कोशिश कर रही हैं। उनके अंदाज़, उनकी भाव भंगिमाएं, उनकी भाषा और शैली जैसे हर रूप में एक स्त्री की आज़ाद ख़याली और उन्मुक्त अभिव्यक्ति का गान गाती हैं। उनके शब्दों में स्त्री के अधिकारों और पहचान के नए अर्थ जुड़े होते हैं- प्रसंग महाभारत के और संदर्भ जीवन के, जीवन से जोड़ते हुए।

लोककलाएं हमारी सांस्कृतिक धरोहर है, इन्हें हमें अपनी भावी पीढ़ियों के लिए संभालकर रखना चाहिए। जो करो दिल से करो और अपने आसपास सबके साथ सहयोग करो, तुम जीत हासिल ज़रूर करोगे।

पांडवानी की पहली महिला कलाकार तीजनबाई

हम में से न जाने कितनी तीजन और रीतू आज भी समाज और परिवार के दायरों में अपनी प्रतिभा और प्रत्यंचा लिए बैठी हैं। गांव से संसार तक उनकी कल्पनाएं भी उड़ान भर सकती हैं-देर सिर्फ़ रीतू और तीजन जैसे उत्साह और फ़ैसले की है। आज हम जब भी इन कलाकारों का नाम लेते हैं तो महिलाओं की हिम्मत और कुछ कर गुज़रने की जिजीविषा को भी सलाम करने का मन होता है।

इन कलाकारों का व्यक्तित्व हमें सिखाता है कि प्रतिभा को सिर्फ़ एक मौके की तलाश होती है। किसी भी तरह के साधन मौजूद न होने पर भी, कोई सहयोगात्मक माहौल न होने पर भी सिर्फ़ अपनी हिम्मत और निर्णय के साथ हम आगे कदम बढ़ा सकते हैं और बहुत कुछ कर दिखा सकते हैं।

हम अतीत से सीखें, और एक नई दुनिया गढ़ें।

सुनीता ठाकुर *जागोरी की सक्रिय कार्यकर्ता हैं। वे महिला मुद्दों पर लम्बे अर्से से लिखती रही हैं।*